महिषासुरमर्दिनी दुर्गाः एक प्रतिमा शास्त्रीय अध्ययन (गुप्तकाल तक अंकन)

* डॉ0 वन्दना सन्त

प्राचीन भारतीय देवसमूह में देवताओं के साथ–साथ देवियों का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिन्दू देवियों में दुर्गा अपना विशिष्ट स्थान रखतीं है। इन्हें शक्ति एवं क्रियाशीलता का प्रतीक माना गया है। उन्हें अम्बिका, भवानी, कात्यायनी, महिषासुरमर्दिनी, चण्ड़ी विन्ध्यवासिनी, नारायणी, काली, भद्रकाली आदि नामों से विभूषित किया गया है। महिषासुरमर्दिनी शक्ति सम्पन्न दुर्गा का ही एक रुप है, जो महिषासुर का वध करने के कारण महिषासुरमर्दिनी कहलायी। दुर्गा पूजा के पर्व पर इस रुप की पूजा भारत के विभिन्न भागों में, विशेष रुप से शक्ति उपासना के केन्द्र बंगाल में अत्यंत श्रद्धा एवं उत्साह से की जाती है।[1] महिषासुरमर्दिनी दुर्गा की स्तुति महाभारत में महिषासुरनाशिनी[2] महिषासृकप्रिया[3] के नाम से की जाती है। पुराणों में महिषासुर के मर्दन की कथा मिलती हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार पूर्वकाल में दैत्यराज महिषासुर देवराजइन्द्र को पराजित कर स्वंय इन्द्र बन बैठा। क्रोधित विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्रादि देवताओं से निकला हुआ तेजपुंज एकत्र होकर स्त्रीरुप में परिणित हो गया। विभिन्न देवताओं के तेज से देवी के भिन्न–भिन्न अंगो का प्रादुर्भाव हुआ यथा शिव के तेज से मुख, विष्णु के तेज से भुजांए, ब्रह्मा के तेज से चरण आदि। इस देवी को देवताओं ने अपने–अपने विशेष आयुधों को देकर सम्मानित किया। हिमालय ने वाहन के रुप में सिंह को भेंट किया। इस रुप में दुर्गा रणभुमि में महिषासुर की सेना का संहार करने लगी। अपनी सेना की दयनीय दशा देखकर महिषासुर ने महिष का रुप धारण किया और अपने सींगो, मुख, खुरों, पूंछ, आदि से देवी के गणों पर प्रहार करने लगा। अन्त में देवी ने महिष रुपधारी को पैर से दबाकर उसके कण्ठ में त्रिशूल से प्रहार किया, दबे हुए महिष के मुख से

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व, नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

दैत्य (पुरुष रुप) बाहर आने लगा, किन्तु देवी ने दैत्य का निकलना रोक दिया। तब दैत्य इसी रुप में देवी से युद्ध करने लगा। अन्त में देवी ने उसका वध कर डाला।[4] यही कथा आंशिक भिन्नता के साथ अन्य पुराणों मे भी मिलती हैं।[5] पुराणों में महिषासुरमर्दिनी दुर्गा को अम्बिका[6] भद्रकाली[7] चण्डिका[8] कात्यायनी[9] वही विन्ध्यवासिनी आादि नामो से विभूषित किया गया है[10]

प्रतिमा लक्षण

महिषासुरमर्दिनी दुर्गा के प्रतिमा लक्षण पुराणों, शिल्प एवं वास्तु शास्त्रों में उपलब्ध है, जहां उनकी चतुर्भुजी, अष्टभुजी दसभुजी, द्वादशभुजी, षोडशभुजी, अष्टादशभुजी, बीसभुजी एवं अट्ठाइसभुजी मूर्तियों का वर्णन है।

मत्स्यपुराण में महिषासुरमर्दिनी की दसभुजी मूर्ति को कात्यायनी कहा गया है।[11] इसके अनुसार कात्यायनी चन्द्रांकित जटाजूट एवं सर्व प्रकार के अलंकरणों से युक्त अतसीपुष्प के सदृश कान्ति से युक्त मनोहर रूप में हो। देवी तीन नेत्र और दस भुजाओ से युक्त त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हों। उनके पांच दांए हाथों में त्रिशूल खड्ग, चक्र, वाण एवं शक्ति तथा बाएं हाथों में खेटक, चाप, पाश, अंकुश, घंटा अथवा परशु हो[12] देवी के चरणों के नीचे मस्तक विहीन महिष हो, जिसकी ग्रीवा से उद्भूत दैत्य (महिषासुर) खड्गधारी हो, पास ही में मस्तक पड़ा हो। दैत्य की भौहे चढ़ी, मुखाकृति भयंकर एवं शरीर रक्त से लथपथ हो। वह नागपाश से जकड़ा हुआ, रक्त वमन करते हुए लाल और विस्फारित नेत्रों से देवी को घूर रहा हो। साथ में उनका वाहन सिंह हो। देवी का दायां चरण सिंह की पीठ पर और बांए चरण का अंगूठा कुछ उठकर महिष की पीठ पर स्थित हो साथ में देवी की स्तुति करते देवगण भी हो।[13] कात्यायनी मूर्ति का ऐसा विवरण मानसोल्लाल एवं शिल्परत्न में मिलता है। इन शास्त्रों में देवी के त्रिशूल से बिंधे हुए दैत्य को चित्रित करने का अतिरिक्त निर्देश है तथा रूप मण्डन में देवी के अंतिम बाएं हाथ को घण्टा सहित दैत्य के केश से युक्त बताया गया है।[14] कात्यायनी के

यही प्रतिमा लक्षण अपराजित–पृच्छा में आंशिक भिन्नता के साथ उपलब्ध है।[15] यहां दस आयुधों का उल्लेख होते हुए भी अन्त में देवी का एक बांया हाथ दैत्य के कटे हुए सिर से युक्त बताया गया है।[16] अग्निपुराण में माहषासुरमार्दिनी की दसभुजी मूर्ति का वर्णन चण्डिका के नाम से हुआ है इस पुराण के अनुसार चण्डिका के पांच दाए हाथों में खड़ग, शूल, अरि एवं शक्ति तथा बाएं हाथों में नागपाल, चर्म, अंकुश, कुठार एवं धनुष हो।[17] देवी शूल के अग्रभांग से महिष पर प्रहार कर रही हो और साथ में सिंह वाहन हो। यहां वर्णित देवी के आयुध मत्स्य पुराण द्वारा निर्दिष्ट उपर्युक्त आयुधों से साम्य रखते है।

महिषासुरमर्दिनी की अठारहभुजी मूर्ति को वामनपुराण में कात्यायनी कहा गया है।[18] महिषासुरमर्दिनी की बीसभुजी मूर्ति का वर्णन अग्निपुराण, विश्वकर्म शास्त्र एवं देवतामूर्ति प्रकरण में चण्डी के नाम से मिलता है। अग्निपुराण के अनुसार चण्डी तीन नेत्रों से युक्त हो।[19]

गरूणपुराण में महिषासुरमर्दिनी को अट्ठाइस अठारह, बारह, आठ अथवा चार भुजाओं से युक्त चित्रित करने का निर्देश है।[20] यहां देवी के इन आयुधों का उल्लेख है– असि, खेटक, गदा, दण्डा शर, चाप कर्तिका, मुदगर शंख, घण्टा, ध्वजा, दण्ड, परशु, चक्र, डमरू, दर्पण, शक्ति, मूसल, पाश, तोमर (भाला) ढक्का (ढोल) पणव, स्वास्तिक, तर्जनी–मुद्रा, अभय–मुद्रा। देवी महिष दैत्य का वध करती हुयी वाहन सिंह पर आरूढ़ हों।[21]

अग्निपुराण, गरूणपुराण और विश्वकर्मशास्त्र में वर्णित नवदुर्गा मूर्तियों को महिषासुरमर्दिनी के रूप में निर्मित करने का निर्देश है, जिसमें आठ, षोडशभुजी और अष्टादशभुजी हैं।[22]

कुषाणकालीन मूर्तियां

महिषासुरमर्दिनी दुर्गा के चित्रण कुषाणकाल से ही मिलने लगते है। उत्तर भारत के अनेक स्थानों, विशेषकर मथुरा से, इस काल की अनेक पाषाण और मृण्मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं। ये मूर्तियां चतुर्भुजी एवं षड़भुजी हैं, जिनमें देवी महिषासुर का वध करती हुयी चित्रित हैं। इन मूर्तियों में खड़ी

हुयी देवी के सम्मुख दैत्य पूर्णतया महिष रूप में उछलता हुआ पिछले पैरों पर खड़ा है, उसके अगले पैर मुड़े हुए है और उसका मस्तक देवी के कंधे तक पहुंच रहा है। देवी सामान्य हाथों में से दांए से महिष की पीठ और बाएं से ग्रीवा को दबा रही है।[23]

महिषासुरर्दिनी दुर्गा की कुषाणकालीन चतुर्भुजी एवं षड़भुजी मूर्तियां मथुरा, लखनऊ जयपुर, कलकत्ता आदि संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। चतुर्भुजी मूर्तियों में एक मृण्मूर्ति जयपुर के आमेर संग्रहालय में है। इसमें देवी दोनों अधः करों से माहिष का वध कर रही हैं तथा दक्षिणोर्ध्व कर त्रिशूलधारी और वमोर्ध्व कर खेटकधारी है। वाम पार्श्व में वाहन सिंह अंकित है जिस पर देवी का दांया पैर स्थित है। नगर से प्राप्त मूर्ति महिषासुरमर्दिनी की प्राचीनतम मूर्तियों में से एक है।[24] मथुरा संग्रहालय की एक पाषाण मूर्ति में भी महिषासुरमर्दिनी का चित्रण पूर्ववत्[25] है। इसमें द्विभंग मुद्रा में खड़ी हुयी देवी दक्षिणाधः कर से महिष की पीठ और वामाधः से उसकी ग्रीवा को दबा रही है। शेष दक्षिणोर्ध्व खडग और वामोर्ध्व त्रिशूलसे युक्त है। बांए पार्श्व में सिंह शान्त बैठा है। इस संग्रहालय की कुछ चतुर्भुजी पाषाण मूर्तियों[26] एवं मृणमूर्तियों[27] में देवी के दो हाथ पूर्ववत् महिष का वध करने में संलग्न है और शेष ऊर्ध्व करों में क्रमशः खड्ग और खेटक है। इन मूर्तियों में सिंह वाहन नही है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ की एक मूर्ति[28] में महिषासुरमर्दिनी दोनों प्राकृतिक हाथों से महिष को दबोचे हुए है। दोनों उर्ध्वकर एवं देवी का मस्तक खण्डित है। सिंह दांए पार्श्व में बैठा है। इस मूर्ति में देवी के चरणों के नीचे तीन दीपकों का चित्रण उल्लेखनीय है।

षडभुजी मूर्तियों मूं मथुरा से प्राप्त एवं इण्डियन म्यूजियम में संग्रहीत लगभग द्वितीय शताब्दी ई0 की महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति उल्लेखनीय है।[29] यहां खड़ी हुयी देवी दोनों निचले हाथों से उपयुक्त चतुर्भुजी मूर्तियों के समान महिष का वध करती हुयी चित्रित है। उनके मध्य के हाथों मे से दाहिनी खड्गधारी और बांया खेटकधारी है।[30] जोशी के अनुसार यह आयुध त्रिशूल है। शेष दोनों ऊपरी हाथों से मस्तक के ऊपर

लिया गया आयुध।[31] मूर्ति का निचला भाग खण्डित होने से वाहन के विषय में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता है। महिषासुरमर्दिनी की एक ऐसी मूर्ति मथुरा संग्रहायल में देखी जा सकती है। इसी संग्रहालय की कुछ षड़भुजी मूर्तियों में महिष का वध करती हुयी देवी के मध्य के हाथों में खड़ग और खेटक के स्थान पर एक मूर्ति[32] में खड़ग और त्रिशूल का अंकन है तथा चार मूर्तियों में[33] शक्ति और त्रिशूल का अंकन है। इस प्रकार कुषाणकाल में देवी अपने हाथों में धारण किए गए आयुधों से नही वरन दोनों अधःकरों से महिषासुर का संहार करती हुयी चित्रित है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में वाहन सिंह का चित्रण अनिवार्य नही था।

गुप्तकालीन मूर्तियां

गुप्तकाल में महिषासुरमर्दिनी का विकसित रूप देखने को मिलता है। इन मूर्तियों में यद्यपि दैत्य पूर्ववत् पशु रूप में है तथापि महिष को धूल से बेधते हुए और उसके मस्तक अथवा पृष्ठ भाग को पैर से कुचलते हुए देवी के चित्रण में विविधता है। गुप्तकालीन महिषमर्दिनी–मूर्तियां द्विभुजी, चतुर्भुजी, षड़भुजी, अष्टभुजी एवं दशभुजी है।[34]

द्विभुजी मूर्तियां भीटा, इलाहाबाद, मथुरा, सारनाथ, अमरेली (बड़ौदा), जाजपुर (उड़ीसा) आदि स्थानों से प्राप्त हुई है। भीटा से प्राप्त मूर्ति में[35] द्विभुजी देवी दाएं हाथ से महिष की पीठ और बाएं से ग्रीवा को दबा रही है। मथुरा की एक मृण्मूर्ति में वे दाहिने हाथ में धारण किए गए शूल से महिष को बेध रही है और बाए से पूर्ववत् मुख को दबा रही है।[36] सारनाथ और[37] अमरेली की मूर्तियों में देवी का दायां हाथ पूर्ववत् महिष को वेधते हुए त्रिशूल अथवा शक्ति से युक्त है। सारनाथ की मूर्ति में देवी बाएं हाथ से महिष की पूंछ पकड़े हुए है और अमरेली की मूर्ति में वे दांए पैर से महिष का मस्तक कुचल रही है।

चतुर्भुजी मूर्तियों में महिषासुरमर्दिनी की इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता में संग्रहीत मथुरा की एक मूर्ति उल्लेखनीय है। अहिछत्रा से प्राप्त ऐसी ही एक मृण्मूर्ति भारत–कला–भवन की निधि है (संख्या–2075)। इसमें

चतुर्भुजी देवी द्विभंग मुद्रा में है। इनके दोनों अधः कर सम्मुख खड़े महिष का वध करने में संलग्न है। शेष दक्षिण उर्ध्व कर में लिए गए त्रिशूल से वे महिष को वेध रही हैं वाम–उर्ध्व कर खेटकधारी है। बांए चरण के निकट एक अस्पष्ट आकृति है जो सिंह की प्रतीत होती है। इसी प्रकार की एक मूर्ति एरण से मिली है।[38] ये मूर्तियां गुप्तकाल के पूर्व की प्रतीत होती है। बीकानेर गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय में सुरक्षित एक सुन्दर मृणमूर्ति[39] में महिषासुरमर्दिनी अपने दाहिने चरण से महिष के पृण्ठभाग और वामाधः कर से मुख को दबाकर बध करती हुयी चित्रित है। दक्षिणउर्ध्व कर त्रिशूलधारी है, शेष दक्षिणाधः कर का आयुध स्पष्ट नही है और वाम उर्ध्व कर खण्डित है। लगभग चौथी शता0 ई0 की यह प्रतिमा राजस्थान में शक्ति पूजा के अस्तित्व का साक्ष्य है।[40] बड़ौदा की एक मूर्ति में भी चतुर्भुजी दुर्गा दांए चरण से महिष की पीठ और वामाधः कर से उसके मुख को दबाए हुए है। यहां युद्ध में भाग लेते हुए सिंह का चित्रण उल्लेखनीय है।[41] महिष के मस्तक को अपने दाहिने चरण से कुचलती हुयी महिषासुरमर्दिनी का एक सुन्दर चित्रण भूमरा से प्राप्त लगभग पांचवी शता0 ई0 की मूर्ति[42] में दर्शनीय है जो आजकल इलाहाबाद संग्रहालय में है। जबलपुर से प्राप्त एक मूर्ति में दक्षिणाधः कर खड्गधारी एवं दक्षिणउर्ध्व कर त्रिशूलधारी है।[43] महिषासुरमर्दिनी की ऐसी ही एक मूर्ति भारत कला भवन (443) में संग्रहीत है। भीटा से प्राप्त एक लघुमूर्ति में महिषासुरमर्दिनी के वामउर्ध्व कर में खड्ग है और दक्षिणाधः कर का आयुध स्पष्ट नही है।

सिद्ध की गुफा देवगढ़ की मूर्ति[45] में महिषासुरमर्दिनी बायें चरण से महिष के मस्तक को दबाते हुए प्रदर्शित हैं। यह मूर्ति लगभग सातवीं शा0 ई0 की है। इसी की समकालीन ग्यासपुर (मध्य प्रदेश) की एक चतुर्भुजी मूर्ति में पूंछ के स्थान पर पिछले पैरों से महिष को उठाते हुए देवी अंकित है।

षडभुजी मूर्तियों में बेसनगर से प्राप्त (ग्वालियर संग्रहालय में सुरक्षित) मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। इसमें देवी महिष का वध करती हुयी नही बल्कि उसके कटे हुए मस्तक पर समभंग मुद्रा में खड़ी हुयी है। इस

मूर्ति में महिष रूपी दैत्य का वध करके उसके कटे मस्तक[46] पर शान्त भाव से खड़ी देवी तथा उनसे युद्ध करते हुए महिषासुर के सहायक दैत्यों का चित्रण है।[47]

अष्टभुजी प्रतिमाएं अधिकर मथुरा और मध्य प्रदेश से मिली है। मध्य प्रदेश की दो मूर्तियों में एक[48] में अष्टभुजी देवी के दोनों प्राकृतिक हाथ महिष का वध करने में संलग्न है। यह मूर्ति लगभग पांचवी शती की हैं दूसरी छठी शती की है।[49] जिसमें देवी महिष को बाएं चरण से कुचलती हुई प्रदर्शित हैं। मथुरा की एक मूर्ति[50] में अष्टभुजी देवी महिष के मस्तक को बांए चरण से दबाए हुए है और एक बाएं हाथ से महिष की पूंछ पकड़कर उसके पृष्ठ भाग को उठाए हुए है। इस मूर्ति में देवी के वस्त्राभूषण और मस्तक के ऊपर धारण किया गया आयुध कुषाणकाल की उपर्युक्त मूर्तियों से साम्य रखता है।

द्वादशभुजी प्रतिमाओं में उदयगिरि की गुफा संख्या में उत्कीर्ण मूर्तियाँ उल्लेखनीय है। गुफाा संख्या–17 की मूर्ति[51] में देवी अपने दोनों प्राकृतिक हाथों से महिष को दबोचते हुए चित्रित है। गुफा संख्या–13 की मूर्ति[52] में देवी का चित्रण पूर्ववत् है, किन्तु गुफाा संख्या 6 की मूर्ति[53] में द्वादश भुजी देवी महिष का मस्तक अपने एक चरण से दबा रही है और बाएं हाथ से महिष के पिछले पैरों को उठाए हुए है। देवी के दोनों उर्ध्व करों में मस्तक के ऊपर एक पद्महार है[54]

गुप्तकाल में महिषासुरमर्दिनी की अनेक मृणमूर्तियां भी निर्मित हैं। अहिछत्रा से प्राप्त महिषासुरमर्दिनी की मृणभूर्तियां[55] मिली हैं इसमें देवी अधः करो से महिष का वध करते हुए चित्रित है। इन मूर्तियों का रचनाकाल पांचवी–छठी शता0 ई0 से लेकर आठवी नवीं शती तक निर्धारित किया गया है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों[56] से प्राप्त गुप्तोत्तर काल की कुछ खण्डित मूर्तियां भी उल्लेखनीय है। इसमें देवी महिष के मस्तक को दांए पैर से कुचलते हुए अथवा एक बाएं हाथ से मरोड़ते हुए प्रदर्शित है और एक दाएं

हाथ में लिए गए त्रिशूलसे महिष को वेध रही है। इसमें वाहन सिंह अंकित नही है।

संदर्भ–

1. Development of Hindu Iconography by J.N. Banerjea, P. 497; Iconography of Buddhist and Brahmanical Sculptures in Dacca Museum by N.K. Bhattasali, P. 194; B. Sahai p. 181
2. महाभारत, 4, 6, 15
3. वही, 6, 23, 8; E.W. Hopkins, Epic Mythology, P224
4. मार्कण्डेय पुराण, अध्याय 78–80,; W.J. Wilkins op. cit., P.298-99
5. ब्रह्मवैवर्तपुराण 3, 4, 29, 75–88; वामनपुराण, अ0 19–20; वायु पुराण अ0 17–20; देवीभागवत पुराण, 11, अध्याय 17–18
6. मार्कण्डेय पुराण, 79, 51 ; 80, 1 ; 80, 29
7. वही, 80–81
8. वही, 79, 48 ; 80, 27 ; 80, 33–34
9. वही, 79, 48 ; 80, 27 ; 80, 33–34
10. स्कन्द पुराण 6, 122, 75
11. मत्स्य पुराण , 259, 55–56
12. बलराम श्रीवास्तव, पूर्वोक्त भूमिका, पृ0 90
13. रूप मण्डन, 5, 45–50; देवतामूर्ति प्रकरण, 8, 109–17; कात्यायनी मूर्ति का ऐसा विवरण मानसोल्लास (2, 3, 1, 764–72) एवं शिल्परत्न (Elements of Hindu Iconography by T.A. Gopinath Rao, I, II, P-10910, 345) में मिलता है।
14. देवी के सम्भवतः अंतिम बांए हाथ में विकल्प से घण्टे को दैत्य के केश से युक्त बताया गया हैं
15. अपराजित पृच्छा, 223, 6–11
16. सम्भवतः देवी अपने एक बाएं हाथ में पाच आयुधों में से किसी एक स्थान पर विकल्प से दैत्य का सिर धारण करती हों।
17. अग्नि पुराण, 52, 16, 17; Indian Images, I, p-36

यहां दांए हाथ के एक आयुध के रूप में वाण का उल्लेख छूट गया प्रतीत होता है।

18. वामन पुराण, 19.6; "Elements of Hindu Iconography" by T.A. Gopinath Rao, I, II, p-350-351)
19. अग्नि पुराण, 50, 1–6, M.N. Dutt. Agni Purana (Trans.) p-181
20. गरूण पुराण, 1, 38, 7
21. वही 1, 38.11; अवध बिहारी लाल अवस्थी, गरूण पुराण (एक अध्ययन) पृ0 392; M.N. Dutt. Garuna Purna (Trans), p-93
22. कुसुम जायसवाल, शोध प्रबंध–उत्तर भारत की प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियां, पृ0 107–08
23. वही, पृ0 120
24. R.C. Agarwal, "Goddess Worship in Ancient Rajasthan (A terracotta Plague of Mahisasurmardini from Nagar, Rajasthan, Lalitkala" Nos. 1-2, April, 1955 March. p-72-74, pl. XVIII, fig.-1
25. D.B. Diskalkar, op., cit, p.55, fig iii ; R.C. Agarwal" The Goddess of Mahisasurmardini in Early Indian Art' , Artibus Asiae, vol. XXI, No.2 1958, p-124; R.C. Sharma, Mathura Museum Art, p.56
26. V.S. Agarwal, P-158, Mathura Museum Catalogue. pt. IV p. 125
27. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ0 135
28. वही, पृ0 136
29. O. Viennot, PP. 368, 371-72
30. जोशी के अनुसार यह आयुध त्रिशूल है।
31. वियनाट के अनुसार यह आयुध खड़ग है।
32. मथुरा संग्रहालय, संख्या 501–116
33. V.S. Agarwala, OP Cit p. 158
34. कुसुम जायसवाल, उत्तर भारत की प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियां,

पृ0 121

35. Archaeological Survey of India. Annual Reports (New Series) Started by John Marshall.

36. D.R. Sahani, "Catalogue of the Museum of Archaeology at Sarnath", p.167; B. sahai, op., p. 185

37. S.R. Rao Excavations at Amreli, BN & PG, Vol XVIII 1966 pp. 94-94 pl. xxxi

38. S.P. Sukla, "Early form of Mahisasurmardini in the Art of Mathura" Malwa Through the ages", 1981, p-26

39. V.S. Srivastava, "Catalogue and Guide to Ganga Jubilee Museum, Bikaner" P.11

40. P.K. Majumdar, op., cit, pp. 94, 97

41. V.S. Parikh, " Some Sculptures from Masara, Baroda, Vol. XXV, 1975-76, p.80, fig 5

42. St. Kramnisch, Indian Sculpture, pp 172-73

43. महिषासुरमर्दिनी की ऐसी ही एक मूर्ति भारत कला भवन (443) में संग्रहीत है।

44. ASIAR; 1911-12, pl XXI , fig 14

45. O. Viennot, "The Mahisasurmardini from sidi-ki-Gupha at Deogarh" JISOA, voil iV, pt 1 p. 6869, 1971-72

46. R.C. Majumdar, Ed. "The History and Culture of Indian People", Vol III, p 443

47. S.P. Sukla, Durga Relief from Bhitargaon, BMA No 10, Dec 1972, p.13, fig.1

48. P. Pal, The Ideal Image, p.77, fig 25

49. वही p. 97, fig 47

50. J. Yogel, "Catalogue of the Archacological Museum Mathura," pp. 96-97

51. D.R. Patil, "Monuments of udaygiri Hill", p. 40-41

52. वही p. 39

53. ASI, Vol. X, p. 46-56

54. DHI, p. 498; R.C. Agarwala, op; cit ; p. 128

55. V.S. Agarwal, "Terracottas Figurines of Ahichchhatra Dis- Bareilly U.P., No. 4 July, 1947, Jan 1948, p. 133-34

56. R.C. Agarwal, "Some Unpublished Sculptures from South Western Rajasthan" Lalit Kala, 6 Oct, 1959, p.65